

# 成语故事 上

正坤 编



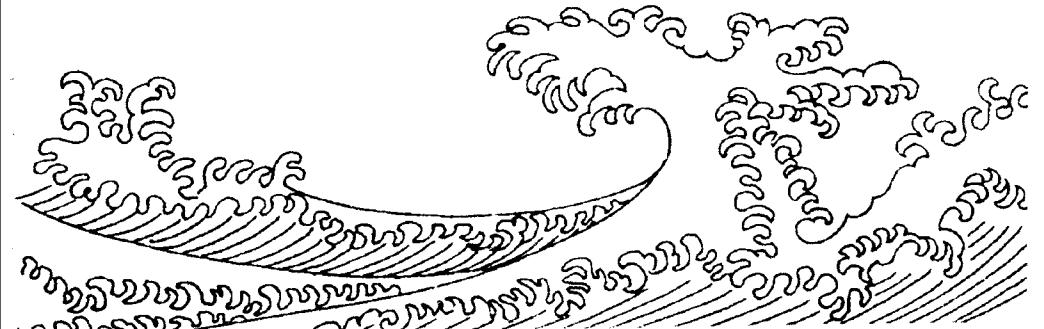
坚众奔溃，余众弃甲宵遁，  
闻风声鹤唳，皆以为王师已至，  
草行露宿，重以饥冻，死者十七八。  
——《晋书·谢玄传》

中国古典文化精华

# 成语故事 上

正坤 编

中国文史出版社



## 图书在版编目 (CIP) 数据

成语故事 / 正坤编. -北京: 中国文史出版社,  
2002. 12

(中国古典文化精华)

ISBN 7-5034-1299-2

I. 成… II. 正… III. 汉语- 成语  
IV. H136.3

中国版本图书馆 CIP 数据核字 (2002) 第 093786 号

## 中国古典文化精华

成语故事 (上下册) 正 坤 编

---

出版发行: 中国文史出版社

社 址: 100811 北京太平桥大街 23 号

责任编辑: 方正 韩淑芳

印 刷: 河北省滦县滦兴书刊印刷厂

装 订: 河北省滦县滦兴书刊印刷厂

经 销: 新华书店北京发行所

开 本: 850×1168 1/32

印 张: 25 字数: 655 千字

版 次: 2003 年 1 月北京第 1 版

印 次: 2003 年 1 月第 1 次印刷

全套定价: 448.00 元

---

文史版图书如有印、装错误, 工厂负责退换。

## 出版前言

中华文化源远流长，是全民族每个成员的共同财富。不了解中国古典文化，将无以传承中华民族的优秀文化遗产。故此，本套“中国古典文化精华”丛书从历代帙牒盈积的著作中精选出有代表性的作品，内容涵盖了政治、军事、文化、宗教、艺术、医药、民俗等各个领域，多方位、多角度地介绍了源远流长的中国古典文化宝库中之精华。

《诗经》是中国第一部诗歌总集，编成于春秋时代，分为“风”、“雅”、“颂”三大类，共三百零五篇。据《史记》记载，此书系经孔子删定。从古至今，《诗经》对中国的文化，尤其是文学的发展，产生~~产生~~（破其深）的影响。

《唐诗三百首》是旧时家塾课本，共六卷，选唐诗三百零十首，由蘅塘退士辑于清代乾隆年间。后由四藤吟社增补杜甫“咏怀古迹”三首，分体编排。该选本偏重生活及个人情怀的描写，其中许多是脍炙人口的唐诗名篇。

《宋词三百首》据疆村（朱孝臧）选本为底本，另以词牌分类，并据《词学全书》添加词牌简介。因疆村本多选周邦彦、姜夔等派作品，故另据明代毛晋辑《宋六十名家词》及清末江标辑刻的《宋元名家词》等补入所遗宋代名家词百余首，以期囊括宋词各个流派的代表作品。

《元曲三百首》据元代杨朝英选辑的《朝野新声太平乐府》及《乐府新编阳春白雪》为底本，同时补入《梨园按试乐府新声》部分套数、小令，依照曲牌进行分类，并添加了曲牌简介。

《古文观止》是旧时的启蒙读本，由吴楚才、吴调侯于清代康熙年间编成，上起先秦，下迄明代，共二百二十二篇。该选本按时代先后编排，以散文为主，兼收骈文，各篇均有简要的评注。虽然该选本不尽完善，然因其繁简适中，故流传甚广。

《中华上下五千年》以历史上有重要影响的人物及重大事件为贯穿主线,用短篇故事的形式,上至远古,下至清末,据史料剪裁而成,涵盖了中国古代政治、军事、文化、经济、科技、艺术等领域,全面梗概地介绍了中国五千年的历史知识。

《成语故事》精选历代流传至今、有一定故事性的成语九百余条,介绍了各成语的出处、典故、原意及用法。其中所叙历史故事简练扼要,融知识性于可读性之中。

《史记》为中国第一部纪传体通史,西汉司马迁撰,原名《太史公书》,共一百三十篇,记事起于黄帝,迄于汉武帝,共约三千余年,其语言生动,形象鲜明,在文学史上有很高的地位。

《易经》为五经之首,是中国古代哲学的渊源,对中国历代均有深广的影响。孔子说:“假我数年卒以学易,可以无大过矣。”

《黄帝内经》主要部分约成书于春秋战国时代,是中医四大经典之首和中医理论体系的渊薮,与《伏羲八卦》、《神农本草》并称为“上古三坟”。现据明顾从德翻刻宋本等多种刻本,博众家之长,力求通俗易懂,遵循最接近经文的原则。底本中有义理晦涩难通之处,则依据历代注家意见予以变通。

《本草纲目》成书于明代万历六年,是医药学家李时珍耗时三十年完成的中药学经典,现据胡成龙金陵刻本,按原书部类择要辑成。

流传于民间的文化精华,同样是中国文化的宝藏,故此特选编了《对联》《楹联》《谚语》《俗语》《谜语》《歇后语》等,以期趋近全方位介绍中国文化的精华。

鉴于编写时间仓促,倘有不妥之处,敬请各位方家不吝赐教。

二〇〇二年十一月二十日

# 目 录

|        |      |
|--------|------|
| 爱屋及乌   | (1)  |
| 哀鸿遍野   | (2)  |
| 哀梨蒸食   | (3)  |
| 安步当车   | (3)  |
| 按兵不动   | (5)  |
| 安居乐业   | (7)  |
| 安然无恙   | (8)  |
| 安如泰山   | (9)  |
| 按图索骥   | (10) |
| 八面威风   | (11) |
| 拔苗助长   | (12) |
| 拔山举鼎   | (12) |
| 拔帜易帜   | (13) |
| 白头如新   | (14) |
| 百步穿杨   | (15) |
| 百川归海   | (16) |
| 百感交集   | (17) |
| 百闻不如一见 | (18) |
| 百丈竿头   | (19) |
| 百折不挠   | (20) |
| 半部论语   | (21) |

|        |      |
|--------|------|
| 班门弄斧   | (22) |
| 半途而废   | (23) |
| 包藏祸心   | (24) |
| 抱薪救火   | (25) |
| 杯弓蛇影   | (26) |
| 必恭必敬   | (27) |
| 标新立异   | (28) |
| 别开生面   | (29) |
| 别有天地   | (30) |
| 别无长物   | (31) |
| 宾至如归   | (32) |
| 兵不血刃   | (33) |
| 兵不厌诈   | (34) |
| 兵贵神速   | (35) |
| 冰山难靠   | (36) |
| 鞭长莫及   | (37) |
| 髀肉复生   | (38) |
| 病人膏肓   | (39) |
| 捕风捉影   | (40) |
| 不逞之徒   | (41) |
| 不耻下问   | (41) |
| 不打不成相识 | (42) |
| 不得要领   | (44) |
| 不寒而栗   | (45) |
| 不伦不类   | (46) |

|           |      |
|-----------|------|
| 不合时宜      | (47) |
| 不堪回首      | (48) |
| 不可多得      | (50) |
| 不可救药      | (51) |
| 不可同日而语    | (52) |
| 不拘一格      | (54) |
| 不求甚解      | (55) |
| 不名一钱      | (56) |
| 不入虎穴,不得虎子 | (57) |
| 不敢越雷池一步   | (59) |
| 不贪为宝      | (60) |
| 不学无术      | (61) |
| 不为五斗米折腰   | (62) |
| 不远千里      | (63) |
| 不因人热      | (64) |
| 不遗余力      | (65) |
| 不知所云      | (68) |
| 不知人间,有羞耻事 | (68) |
| 不自量力      | (69) |
| 博而不精      | (70) |
| 博士买驴      | (71) |
| 残杯冷炙      | (72) |
| 草船借箭      | (73) |
| 草菅人命      | (74) |
| 草木皆兵      | (75) |

|           |      |
|-----------|------|
| 沧海桑田      | (76) |
| 才高八斗      | (77) |
| 车水马龙      | (78) |
| 车载斗量      | (79) |
| 长驱直入      | (80) |
| 城门失火，殃及池鱼 | (81) |
| 城狐社鼠      | (82) |
| 乘风破浪      | (83) |
| 乘兴而来      | (84) |
| 乘人之危      | (85) |
| 程门立雪      | (86) |
| 惩一警百      | (87) |
| 惩前毖后      | (88) |
| 赤膊上阵      | (89) |
| 出奇制胜      | (90) |
| 出尔反尔      | (91) |
| 出类拔萃      | (92) |
| 出人头地      | (93) |
| 豺狼当道      | (94) |
| 出言不逊      | (95) |
| 垂头丧气      | (96) |
| 超群绝伦      | (97) |
| 楚弓楚得      | (97) |
| 楚囚相对      | (98) |
| 楚材晋用      | (99) |

|      |       |
|------|-------|
| 唇亡齿寒 | (100) |
| 垂头丧气 | (102) |
| 魑魅魍魉 | (103) |
| 春风得意 | (103) |
| 重蹈覆辙 | (104) |
| 寸草春晖 | (105) |
| 摧枯拉朽 | (106) |
| 从善如流 | (107) |
| 从容不迫 | (108) |
| 打草惊蛇 | (109) |
| 大笔如椽 | (110) |
| 大材小用 | (111) |
| 大腹便便 | (112) |
| 大公无私 | (113) |
| 大逆不道 | (114) |
| 大义灭亲 | (115) |
| 箪食壶浆 | (116) |
| 箪食瓢饮 | (117) |
| 当局者迷 | (118) |
| 党同伐异 | (119) |
| 当务之急 | (120) |
| 呆若木鸡 | (121) |
| 道不拾遗 | (122) |
| 道听途说 | (123) |
| 得陇望蜀 | (124) |

|       |       |
|-------|-------|
| 得过且过  | (125) |
| 得心应手  | (126) |
| 得意忘形  | (127) |
| 德高望重  | (128) |
| 滴水穿石  | (129) |
| 颠倒黑白  | (130) |
| 掉以轻心  | (132) |
| 倒行逆施  | (133) |
| 独挡一面  | (134) |
| 杜渐防微  | (135) |
| 咄咄怪事  | (136) |
| 多多益善  | (137) |
| 对牛弹琴  | (138) |
| 断章取义  | (139) |
| 东窗事发  | (141) |
| 东山再起  | (142) |
| 东施效颦  | (143) |
| 恶贯满盈  | (144) |
| 尔虞我诈  | (144) |
| 二桃杀三士 | (146) |
| 发奸擿伏  | (147) |
| 发蒙振落  | (149) |
| 罚不当罪  | (150) |
| 翻然改图  | (151) |
| 返老还童  | (151) |

|       |       |
|-------|-------|
| 防微杜渐  | (152) |
| 废寝忘食  | (153) |
| 分崩离析  | (154) |
| 风吹草动  | (155) |
| 分道扬镳  | (156) |
| 分庭抗礼  | (157) |
| 风声鹤唳  | (159) |
| 奉公守法  | (160) |
| 奋不顾身  | (161) |
| 覆巢无完卵 | (162) |
| 负荆请罪  | (162) |
| 覆水难收  | (163) |
| 负隅顽抗  | (164) |
| 赴汤蹈火  | (165) |
| 负重致远  | (166) |
| 改弦易辙  | (167) |
| 改过自新  | (168) |
| 高山流水  | (169) |
| 高阳酒徒  | (171) |
| 高屋建瓴  | (172) |
| 感激涕零  | (172) |
| 各得其所  | (174) |
| 各自为政  | (175) |
| 鼓盆之戚  | (175) |
| 肝脑涂地  | (176) |

|        |       |
|--------|-------|
| 孤注一掷   | (177) |
| 挂羊头卖狗肉 | (178) |
| 管中窥豹   | (179) |
| 管鲍之交   | (180) |
| 鬼斧神工   | (181) |
| 贵人多忘   | (181) |
| 刮目相待   | (183) |
| 篝火狐鸣   | (184) |
| 钩心斗角   | (185) |
| 苟延残喘   | (186) |
| 过门不入   | (187) |
| 功败垂成   | (188) |
| 巧亏一篑   | (189) |
| 邯郸学步   | (189) |
| 汗马功劳   | (190) |
| 汗流浃背   | (191) |
| 害群之马   | (192) |
| 沆瀣一气   | (193) |
| 好好先生   | (194) |
| 好谋善断   | (195) |
| 骇人听闻   | (196) |
| 何足挂齿   | (197) |
| 鹤立鸡群   | (198) |
| 涸辙之鲋   | (199) |
| 囫囵吞枣   | (200) |

|           |       |
|-----------|-------|
| 壶中天地      | (200) |
| 怙恶不悛      | (201) |
| 狐假虎威      | (202) |
| 挥汗成雨      | (203) |
| 华而不实      | (204) |
| 悔过自新      | (205) |
| 悔之无及      | (206) |
| 画饼充饥      | (206) |
| 画虎类犬      | (207) |
| 画龙点睛      | (208) |
| 画蛇添足      | (209) |
| 黄粱一梦      | (210) |
| 讳莫如深      | (211) |
| 讳疾忌医      | (213) |
| 合浦珠还      | (214) |
| 后生可畏      | (215) |
| 后来之秀      | (215) |
| 哄堂大笑      | (216) |
| 鸿鹄之志      | (217) |
| 家鸡野雉      | (218) |
| 家徒四壁      | (219) |
| 家有敝帚，享之千金 | (220) |
| 见利忘义      | (220) |
| 见怪不怪      | (223) |
| 见猎心喜      | (224) |

|      |       |
|------|-------|
| 坚壁清野 | (225) |
| 间不容发 | (226) |
| 箭在弦上 | (227) |
| 兼听则明 | (228) |
| 嫁祸于人 | (228) |
| 渐入佳境 | (229) |
| 脚踏实地 | (231) |
| 矫枉过正 | (232) |
| 江郎才尽 | (233) |
| 骄兵必败 | (234) |
| 骄奢淫逸 | (235) |
| 狡兔三窟 | (235) |
| 击楫中流 | (237) |
| 将勤补拙 | (238) |
| 机不可失 | (239) |
| 鸡口牛后 | (239) |
| 鸡犬不宁 | (240) |
| 鸡犬升天 | (241) |
| 鸡虫得失 | (242) |
| 鸡鸣狗盗 | (243) |
| 积不相能 | (244) |
| 激浊扬清 | (246) |
| 骥服盐车 | (247) |
| 寄人篱下 | (248) |
| 集思广益 | (248) |

|           |       |
|-----------|-------|
| 嗟来之食      | (249) |
| 尽善尽美      | (250) |
| 近水楼台      | (251) |
| 金玉其外,败絮其中 | (252) |
| 金石为开      | (253) |
| 金城汤池      | (254) |
| 疾风知劲草     | (256) |
| 噤若寒蝉      | (257) |
| 竭泽而渔      | (258) |
| 惊弓之鸟      | (259) |
| 精卫填海      | (260) |
| 精疲力尽      | (261) |
| 鞠躬尽瘁      | (262) |
| 举足轻重      | (263) |
| 举案齐眉      | (264) |
| 举棋不定      | (265) |
| 居安思危      | (266) |
| 卷土重来      | (267) |
| 开诚布公      | (268) |
| 开卷有益      | (269) |
| 开门揖盗      | (270) |
| 开天辟地      | (271) |
| 侃侃而谈      | (272) |
| 克己奉公      | (273) |
| 克勤克俭      | (274) |

|      |       |
|------|-------|
| 刻舟求剑 | (275) |
| 空洞无物 | (276) |
| 空前绝后 | (277) |
| 空中楼阁 | (278) |
| 口蜜腹剑 | (279) |
| 口若悬河 | (280) |
| 脍炙人口 | (281) |
| 旷日持久 | (282) |
| 困兽犹斗 | (283) |
| 蓝田生玉 | (284) |
| 滥竽充数 | (285) |
| 狼狈不堪 | (286) |
| 狼子野心 | (287) |
| 老马识途 | (288) |
| 老牛舐犊 | (289) |
| 老生常谈 | (289) |
| 老当益壮 | (291) |
| 老妪能解 | (291) |
| 老莱娱亲 | (293) |
| 劳而无功 | (293) |
| 乐不思蜀 | (295) |
| 乐不可支 | (296) |
| 乐此不疲 | (297) |
| 李代桃僵 | (298) |
| 乐极生悲 | (299) |